

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-2* *Issue-9* *September 2025*

**भारतीय दर्शन का आधुनिक समाज पर प्रभाव: एक नीति
शास्त्रीय दृष्टिकोण****डॉ० ओम प्रकाश प्रभाकर***सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग, एम० के० एस० कॉलेज, त्रिमुहान-चंदौना, दरभंगा, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा*

सारांश: भारतीय दर्शन, जो वेदों, उपनिषदों, गीता, बौद्ध और जैन विचारधाराओं से प्रेरित है, आज भी आधुनिक समाज में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। भारतीय दार्शनिक परंपरा जीवन के व्यावहारिक, नैतिक और आध्यात्मिक पक्षों को सशक्त करती है, जिससे व्यक्ति और समाज के नैतिक उत्थान की संभावनाएं बढ़ती हैं। भारतीय नीति शास्त्र, जो आचार, धर्म, अर्थ और मोक्ष के सिद्धांतों पर आधारित है, आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों के पुनर्संस्थापन हेतु आवश्यक दृष्टिकोण प्रदान करता है। आधुनिक युग में, जहाँ उपभोक्तावाद और भौतिकता प्रमुखता से बढ़ रहे हैं, भारतीय दर्शन जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए एक मार्गदर्शन का कार्य करता है। योग और ध्यान जैसे दार्शनिक सिद्धांत मानसिक शांति और स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं, जो आज की तनावपूर्ण जीवनशैली में अत्यंत आवश्यक हैं। इसके साथ ही, वेदांत दर्शन समग्र दृष्टिकोण प्रदान करते हुए व्यक्ति को आत्मबोध और आत्म-विकास की ओर प्रेरित करता है। समाज सुधार की दृष्टि से देखा जाए तो गांधी, विवेकानंद और दयानंद सरस्वती जैसे विचारकों ने भारतीय दर्शन के सिद्धांतों को आधुनिक समाज में व्यावहारिक रूप दिया। आज के समय में नीति निर्माण और प्रशासन में भारतीय दर्शन के तत्वों का उपयोग कर समावेशी और नैतिक समाज की स्थापना की जा सकती है। हालांकि, भारतीय दर्शन को आधुनिक समाज में पूर्ण रूप से लागू करने में कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जैसे कि पश्चिमी विचारधारा का प्रभाव और नैतिक मूल्यों का ह्रास। इसके बावजूद, भारतीय दर्शन के माध्यम से समाज में नैतिक शिक्षा, सहिष्णुता और आत्मानुशासन को बढ़ावा देने की संभावनाएं प्रबल हैं।

मुख्य शब्द— भारतीय दर्शन, आधुनिक समाज, नीति शास्त्र, योग, वेदांत, नैतिकता, मूल्य शिक्षा, आध्यात्मिकता, जीवन दृष्टि, समाज सुधार।

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध चिंतन परंपराओं में से एक है, जिसमें जीवन, समाज और ब्रह्मांड के गूढ़ रहस्यों को समझने के प्रयास किए गए हैं। यह दर्शन न केवल आत्मज्ञान और मुक्ति का मार्गदर्शन करता है, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों को भी दिशा प्रदान करता है। भारतीय चिंतन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जीवन के चार प्रमुख पुरुषार्थों के रूप में स्वीकार किया गया है, जो मानव जीवन के संपूर्ण विकास को सुनिश्चित करते हैं। आधुनिक समाज, जो भौतिकता और तकनीकी प्रगति की ओर तेजी से अग्रसर हो रहा है, उसे संतुलन और नैतिक मूल्यों की ओर पुनः उन्मुख करने में भारतीय दर्शन एक प्रभावी साधन बन सकता है। भारतीय दर्शन अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है, जो वेदों, उपनिषदों, पुराणों और अन्य ग्रंथों में निहित है। इसमें जीवन के मूलभूत प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है। भारतीय दर्शन के प्रमुख छह आस्तिक दर्शनों में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत शामिल हैं। इन दर्शनों में आत्मा, परमात्मा, मोक्ष, कर्म और पुनर्जन्म जैसे विषयों पर गहन विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त, बौद्ध और जैन दर्शनों ने भी भारतीय विचारधारा में विशेष योगदान दिया है, जिन्होंने नैतिकता, अहिंसा और ध्यान को प्राथमिकता दी है। भारतीय दर्शन का उद्देश्य केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संतुलन और नैतिकता स्थापित करने का मार्ग भी प्रशस्त करता है। यह हमें आत्मानुभूति और जीवन के उच्च आदर्शों की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है। भारतीय दर्शनों में कर्म, भक्ति और ज्ञान को मोक्ष प्राप्ति के विभिन्न मार्गों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो आधुनिक समाज के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

आधुनिक समाज तेजी से बदलते परिवेश और तकनीकी विकास के कारण कई जटिलताओं का सामना कर रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हो रहे अभूतपूर्व विकास ने जहां जीवन को सरल और सुविधाजनक बनाया है, वहीं नैतिकता और सामाजिक मूल्यों में ह्रास भी देखा जा रहा है। आधुनिक समाज की प्रमुख विशेषताओं में भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, प्रतिस्पर्धा और नैतिक मूल्यों में गिरावट प्रमुख हैं। वैज्ञानिक उन्नति और वैश्वीकरण ने संचार और संसाधनों की उपलब्धता को आसान बना दिया है, लेकिन इसके साथ ही नैतिकता, आध्यात्मिकता और सामाजिक समरसता में कमी आई है। इस परिप्रेक्ष्य में, भारतीय दर्शन का मार्गदर्शन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, जो जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक संतुलन को स्थापित करने में सहायक हो सकता है।

नीति शास्त्र का अर्थ सामाजिक जीवन को संतुलित और संगठित करने वाली नीतियों और नियमों से है। यह शास्त्र व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर नैतिक आचरण और उत्तरदायित्व को स्थापित करने पर बल देता है। भारतीय संदर्भ में, नीति शास्त्र को धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और राज्यशास्त्र के रूप में देखा जाता है, जो संपूर्ण समाज के संचालन और कल्याण को सुनिश्चित करता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति और भगवद्गीता जैसे ग्रंथों में नीति शास्त्र की गहन व्याख्या की गई है। इनमें जीवन के सभी क्षेत्रों में नैतिकता, कर्तव्यबोध और समाजोपयोगी नीतियों को लागू करने का सुझाव दिया गया है। भारतीय नीति शास्त्र केवल शासन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्तिगत आचरण, पारिवारिक व्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने को भी प्रभावित करता है। आधुनिक समाज में नीति शास्त्र की आवश्यकता इसलिए भी बढ़ गई है क्योंकि भौतिक प्रगति के बावजूद समाज में नैतिक पतन, भ्रष्टाचार और असमानता जैसी समस्याएं उभर रही हैं। भारतीय नीति शास्त्र में इन समस्याओं का समाधान नैतिकता, सत्यमेव जयते, लोक कल्याण और धर्म के माध्यम से किया गया है, जो समकालीन नीति-निर्माताओं के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।¹²

इस शोध का मुख्य उद्देश्य भारतीय दर्शन की उन नीतिगत अवधारणाओं का अध्ययन करना है, जो आधुनिक समाज में नैतिकता और जीवन मूल्यों के पुनर्संस्थापन में सहायक हो सकती हैं। भारतीय दर्शन में निहित नैतिकता, संयम, अहिंसा और सहिष्णुता के सिद्धांत वर्तमान समाज में व्याप्त सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक असंतुलन को दूर करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह शोध भारतीय नीति शास्त्र की उन अवधारणाओं को समझने का प्रयास करेगा, जो समाज के विकास और शांति के लिए आवश्यक हैं। यह अध्ययन आधुनिक समाज में बढ़ती चुनौतियों, जैसे कि पर्यावरण संकट, मानसिक तनाव, और सामाजिक असमानता के समाधान में भारतीय दर्शन की उपयोगिता को रेखांकित करेगा। इस शोध का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह आधुनिक समाज के लिए एक नैतिक मार्गदर्शिका के रूप में भारतीय दर्शनों की पुनः प्रासंगिकता को उजागर करेगा।

भारतीय दर्शन की प्रमुख धाराएँ

भारतीय दर्शन एक समृद्ध और गहन परंपरा है, जिसमें जीवन, ब्रह्मांड और आत्मा के रहस्यों को समझने के लिए विभिन्न दर्शनों का विकास किया गया है। इन दर्शनों में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत जैसी आस्तिक परंपराएँ शामिल हैं, जबकि बौद्ध और जैन दर्शन नास्तिक परंपराओं के अंतर्गत आते हैं। इन दर्शनों ने न केवल प्राचीन भारत में बल्कि आधुनिक समाज में भी अपने प्रभाव छोड़े हैं। भारतीय दर्शन की विभिन्न धाराएँ आधुनिक समाज की समस्याओं, जैसे मानसिक तनाव, भौतिकतावाद और नैतिक पतन के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। सांख्य दर्शन भारतीय तत्त्वमीमांसा का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसे महर्षि कपिल द्वारा प्रतिपादित किया गया। यह दर्शन प्रकृति (प्रकृति) और पुरुष (चेतना) के द्वैत सिद्धांत पर आधारित है। आधुनिक समाज में सांख्य दर्शन के सिद्धांतों की प्रासंगिकता आत्म-जागरूकता और भौतिकवादी दृष्टिकोण को संतुलित करने में निहित है। सांख्य दर्शन के द्वारा मनुष्य को यह समझने में सहायता मिलती है कि भौतिक संपन्नता से अधिक महत्वपूर्ण आत्मबोध और आत्मसंयम है। यह दर्शन मानसिक शांति, योग साधना और अनुशासित जीवनशैली को बढ़ावा देता है, जो आज के भागदौड़ भरे जीवन में अत्यंत आवश्यक है।¹³

योग दर्शन, जो महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित किया गया, आधुनिक समाज में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया है। योग के विभिन्न अंग, जैसे यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान और समाधि, व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक संतुलन को बनाए रखने में सहायक हैं। आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते तनाव, चिंता और अवसाद को दूर करने के लिए योग को एक प्रभावी साधन माना जाता है। वर्तमान समय में विश्व स्वास्थ्य संगठन और अन्य संस्थाएँ भी योग के मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव को स्वीकार कर रही हैं। ध्यान और प्राणायाम जैसी विधियाँ मानसिक स्पष्टता, एकाग्रता और आत्म-संतुलन को बढ़ावा देती हैं, जिससे व्यक्ति तनावमुक्त और उत्पादक बन सकता है। न्याय और वैशेषिक दर्शन भारतीय तर्कशास्त्र के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। न्याय दर्शन की विशेषता यह है कि यह प्रमाणों के माध्यम से सत्य को जानने का प्रयास करता है, जबकि वैशेषिक दर्शन पदार्थ और उसके गुणों के विश्लेषण पर केंद्रित है। आधुनिक विज्ञान और तकनीक में तार्किकता और व्यवस्थित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें

न्याय दर्शन के सिद्धांत अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रयोगों और साक्ष्यों पर आधारित ज्ञान प्रणाली न्याय और वैशेषिक दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों से प्रेरित मानी जा सकती है। वैशेषिक दर्शन के तत्व, जैसे परमाणुवाद (परमाणु सिद्धांत), आधुनिक भौतिकी में विशेष रूप से प्रासंगिक हैं।⁴

मीमांसा और वेदांत दर्शन भारतीय दर्शन की दो प्रमुख शाखाएँ हैं, जो नैतिकता और आध्यात्मिकता पर विशेष बल देती हैं। मीमांसा दर्शन वेदों की व्याख्या और अनुष्ठानिक सिद्धांतों पर केंद्रित है, जबकि वेदांत दर्शन आत्मा और परमात्मा के संबंधों की व्याख्या करता है। आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों के क्षरण के दौर में मीमांसा और वेदांत का अध्ययन व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता को पुनः स्थापित करने में सहायक हो सकता है। वेदांत के सिद्धांत आत्मज्ञान, भक्ति, और कर्मयोग के माध्यम से व्यक्ति को आत्म-विकास की ओर प्रेरित करते हैं। यह दर्शन सहिष्णुता, करुणा और परोपकार जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करता है, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक हैं।

बौद्ध और जैन दर्शन भारतीय चिंतन परंपरा की नास्तिक शाखाएँ हैं, जो अहिंसा, अपरिग्रह और ध्यान पर विशेष बल देती हैं। बौद्ध दर्शन की चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग व्यक्ति को दुःखों से मुक्त करने और सम्यक आचरण की ओर प्रेरित करते हैं। जैन दर्शन का अहिंसा और अपरिग्रह का सिद्धांत आज के उपभोक्तावादी समाज में अत्यंत प्रासंगिक है। पर्यावरणीय संकट, संसाधनों की अत्यधिक खपत और सामाजिक असमानता के संदर्भ में जैन दर्शन का जीवन के प्रति संतुलित दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकता है। बौद्ध और जैन दर्शन ने आधुनिक मनोविज्ञान और नेतृत्व कौशल को प्रभावित किया है।⁵ आज, अनेक कॉर्पोरेट कंपनियाँ और संगठन कार्यस्थल पर मानसिक शांति और अनुशासन बनाए रखने के लिए बौद्ध ध्यान पद्धतियों का उपयोग कर रही हैं।

भारतीय नैतिकता और आधुनिक जीवन मूल्य

भारतीय नैतिकता एक प्राचीन और समृद्ध परंपरा का प्रतीक है, जो सत्य, अहिंसा, करुणा और सहिष्णुता जैसे मूल्यों पर आधारित है। इन नैतिक मूल्यों की जड़ें वेदों, उपनिषदों, गीता, बौद्ध और जैन ग्रंथों में देखी जा सकती हैं। भारतीय नैतिकता न केवल व्यक्तिगत विकास का मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि सामाजिक समरसता और वैश्विक शांति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आधुनिक जीवन, जो तकनीकी प्रगति और भौतिकवाद से प्रभावित है, में भारतीय नैतिकता के मूल सिद्धांतों का महत्व और भी बढ़ जाता है। भारतीय दर्शन में सत्य, अहिंसा और करुणा को जीवन के आधारभूत स्तंभ माना गया है। महात्मा गांधी ने अहिंसा को सत्य का सर्वोच्च रूप मानते हुए इसे समाज सुधार का मुख्य साधन बनाया। सत्य केवल भाषण और कर्म में ईमानदारी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मबोध और आचरण की पवित्रता से भी संबंधित है। अहिंसा का सिद्धांत केवल शारीरिक हिंसा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक और वाणी की हिंसा को भी रोकने पर बल देता है। करुणा, जो बौद्ध और जैन दर्शन का एक प्रमुख तत्व है, सामाजिक सद्भाव और मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहित करने का आधार बनती है। आधुनिक समाज में इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता इस रूप में देखी जा सकती है कि वे नैतिकता के उच्च मानकों को बनाए रखने, पारस्परिक संबंधों को सुदृढ़ करने और वैश्विक शांति के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।⁶

भारतीय नैतिकता में जीवन को चार पुरुषार्थों—कृधर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—के आधार पर देखा गया है। धर्म, नैतिक आचरण और समाज के प्रति कर्तव्य को दर्शाता है। आधुनिक समाज में धर्म का संदर्भ केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिकता का व्यापक आधार बन चुका है। अर्थ, जो जीवन के आर्थिक पक्ष को दर्शाता है, को भी नैतिकता के दायरे में रखा गया है, ताकि धनार्जन ईमानदारी और न्याय के सिद्धांतों के अनुरूप हो। आधुनिक संदर्भ में यह आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय के रूप में प्रकट होता है। काम, जो इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है, का भी संयम और नैतिकता के साथ होना आवश्यक माना गया है। जबकि मोक्ष, जो भारतीय दर्शन में जीवन का परम उद्देश्य है, आधुनिक समाज में मानसिक शांति और संतुलन के रूप में देखा जा सकता है।⁷

भारतीय नैतिकता आत्मानुशासन, संयम और आध्यात्मिकता पर बल देती है, जबकि पश्चिमी नैतिकता मुख्य रूप से व्यक्तिगत स्वतंत्रता, तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर केंद्रित होती है। भारतीय नैतिकता समुदाय केंद्रित है, जो कर्तव्य, दायित्व और परोपकार पर जोर देती है, जबकि पश्चिमी नैतिकता में अधिकार, स्वतंत्रता और व्यक्तिगत विकास को प्राथमिकता दी जाती है। जहाँ भारतीय नैतिकता कर्म सिद्धांत पर आधारित है, वहीं पश्चिमी नैतिकता मुख्य रूप से तर्क और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से प्रभावित है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में दोनों नैतिक दृष्टिकोणों का समन्वय आवश्यक है, जिससे व्यक्तिगत अधिकारों और सामुदायिक उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन स्थापित किया जा सके। भारतीय दर्शन शिक्षा को केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं करता, बल्कि वह नैतिक मूल्यों के संवर्धन को प्राथमिकता देता है। गीता में कहा गया है कि ज्ञान वह है, जो व्यक्ति को आत्मबोध और सत्य के मार्ग पर ले जाता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय नैतिकता को समाहित करने से छात्रों में अनुशासन, करुणा और कर्तव्यपरायणता के गुणों का विकास संभव है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को शामिल करना आवश्यक है, ताकि युवा पीढ़ी को सामाजिक और

वैश्विक उत्तरदायित्वों के प्रति संवेदनशील बनाया जा सके।

भारतीय दर्शन का सामाजिक संरचना पर प्रभाव

भारतीय दर्शन केवल आध्यात्मिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की संपूर्ण संरचना को दिशा प्रदान करता है। भारत की सांस्कृतिक विरासत में दर्शन का गहरा प्रभाव रहा है, जिसने परिवार, समुदाय, सामाजिक समरसता, जाति व्यवस्था और आधुनिकता के बीच संतुलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वेदांत, सांख्य, योग, और बौद्ध-जैन परंपराओं ने समाज को नैतिकता, सहिष्णुता और सद्भाव की दृष्टि से मार्गदर्शन दिया है। भारतीय दर्शन परिवार को समाज की मूल इकाई मानता है और इसके संरक्षण तथा संतुलन को महत्वपूर्ण मानता है। वैदिक काल से ही धर्म, कर्तव्य, और आपसी सम्मान को पारिवारिक जीवन का आधार माना गया है। गीता में वर्णित कर्मयोग और भक्ति मार्ग परिवार में कर्तव्यपरायणता और परस्पर सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हैं। परिवार व्यवस्था में भारतीय दर्शन का प्रभाव बच्चों को नैतिकता, अनुशासन और परंपराओं के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण रहा है। संयुक्त परिवार प्रणाली, जो भारतीय समाज की विशेषता रही है, व्यक्ति को त्याग, संयम, और सहयोग के मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध करती है। इसके अलावा, उपनिषदों में पारिवारिक उत्तरदायित्वों की व्यापक व्याख्या की गई है, जिससे समाज में सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को बल मिलता है।¹⁸

भारतीय दर्शन की शिक्षाओं में सामाजिक समरसता और सहिष्णुता का महत्वपूर्ण स्थान है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सिद्धांत संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की शिक्षा देता है। यह दर्शन समाज में समावेशिता, विविधता और एकता को प्रोत्साहित करता है। बौद्ध और जैन दर्शनों में अहिंसा और करुणा के सिद्धांतों ने समाज में सामाजिक समरसता को मजबूत किया है। संत परंपरा और भक्ति आंदोलन के माध्यम से भारतीय दर्शन ने विभिन्न वर्गों के बीच समानता और पारस्परिक सम्मान की भावना को प्रोत्साहित किया। आज के वैश्वीकृत समाज में, इन मूल्यों की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ गई है, जहाँ विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच सौहार्द बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन गया है। भारतीय दर्शन जाति और वर्ग व्यवस्था को समाज के संगठन का एक माध्यम मानता रहा है। प्राचीन काल में वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित थी, लेकिन समय के साथ यह जन्म आधारित व्यवस्था में परिवर्तित हो गई, जिससे सामाजिक असमानता उत्पन्न हुई। भगवद्गीता और उपनिषदों में वर्णित कर्मयोग का सिद्धांत यह दर्शाता है कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है और उसका मूल्यांकन उसके कर्म के आधार पर होना चाहिए। बौद्ध और भक्ति आंदोलन ने जाति-पांति की व्यवस्था का विरोध किया और सभी को समानता का संदेश दिया। आधुनिक समाज में, इन विचारों को अपनाने से जातिगत भेदभाव को कम करने और समाज में समानता लाने में सहायता मिल सकती है।¹⁹

आधुनिकीकरण और भारतीय पारंपरिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाना आज के समाज के सामने एक बड़ी चुनौती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव के बावजूद, भारतीय दर्शन की शिक्षाएँ व्यक्ति को नैतिकता और आध्यात्मिकता से जोड़ने में सहायक हैं। वर्तमान में, वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद के प्रभाव के कारण पारंपरिक मूल्य धीरे-धीरे कमजोर हो रहे हैं। ऐसे में भारतीय दर्शन, जो आत्मानुशासन, सहिष्णुता और कर्तव्यपरायणता पर बल देता है, समाज में संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। शिक्षा प्रणाली में भारतीय दर्शन के मूल सिद्धांतों को सम्मिलित कर नई पीढ़ी को नैतिक मूल्यों से परिचित कराया जा सकता है।

आधुनिक समाज में भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता

भारतीय दर्शन, जो सहस्राब्दियों से समाज को दिशा प्रदान करता आ रहा है, आधुनिक समाज में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, भौतिकवाद, मानसिक तनाव और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी चुनौतियों के बीच भारतीय दर्शन का मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। भारतीय दृष्टिकोण जीवन के समग्र विकास पर बल देता है, जिसमें पर्यावरण, मानसिक स्वास्थ्य, सांस्कृतिक पहचान और कार्यस्थल नैतिकता जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को संतुलित करने की क्षमता है। भारतीय दर्शन में पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास का विशेष महत्व दिया गया है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में प्रकृति को देवत्व का स्वरूप मानते हुए इसे पूजनीय बताया गया है। वैदिक साहित्य में 'पृथ्वी सूक्त' और 'ऋग्वेद' में पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए मानवीय जिम्मेदारी को रेखांकित किया गया है।

आधुनिक समाज में पर्यावरणीय संकट और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं के समाधान के लिए भारतीय दर्शन में उल्लिखित 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'अहिंसा परमो धर्मः' जैसे सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हैं। भारतीय विचारधारा सतत विकास को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी देखती है। गीता में वर्णित निष्काम कर्म का सिद्धांत हमें पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी के साथ कार्य करने की प्रेरणा देता है, जिससे संसाधनों का संतुलित उपयोग संभव हो सके। आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते तनाव, अवसाद और मानसिक समस्याओं के समाधान के लिए भारतीय आध्यात्मिक दृष्टिकोण एक प्रभावी साधन है। योग और ध्यान की परंपराएँ व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों में मानसिक शांति, ध्यान और आत्मसंयम के

महत्व को स्पष्ट किया गया है, जो आधुनिक समाज में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। वर्तमान में अनेक मनोवैज्ञानिक भारतीय आध्यात्मिक पद्धतियों को मानसिक स्वास्थ्य के उपचार में सहायक मानते हैं। ध्यान और प्राणायाम के अभ्यास से तनाव, चिंता और अवसाद को कम करने में सहायता मिलती है। भारतीय आध्यात्मिकता, जो आत्म-चिंतन और आत्म-स्वीकार पर बल देती है, मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में सहायक होती है और आंतरिक संतोष की अनुभूति कराती है।¹⁰

वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण विश्व के विभिन्न समाजों का एकीकरण हो रहा है, जिससे भारतीय सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण की आवश्यकता बढ़ गई है। भारतीय दर्शन, जो सार्वभौमिकता और सार्वकालिकता के सिद्धांतों पर आधारित है, वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम है। भारतीय संस्कृति की विशेषता इसकी सहिष्णुता और समावेशिता में निहित है। योग, आयुर्वेद और वेदांत दर्शन ने वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति को एक नई पहचान दिलाई है। वैश्वीकरण के दौर में भारतीय दर्शन के माध्यम से आत्म-परिचय, सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा और नैतिकता को बनाए रखना आवश्यक हो गया है।

आधुनिक कार्यस्थलों में नैतिकता और कर्तव्यपरायणता की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। भारतीय दर्शन के सिद्धांत जैसे सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और कर्मयोग कार्यस्थल में नैतिक मूल्यों की स्थापना में सहायक हो सकते हैं। गीता में वर्णित कर्मयोग और निष्काम कर्म का सिद्धांत एक आदर्श कार्यसंस्कृति को बढ़ावा देने में प्रभावी सिद्ध हो सकता है। आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में, जहां नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, भारतीय दर्शन से प्रेरणा लेकर कार्यस्थल में पारदर्शिता, सहयोग और करुणा की भावना को स्थापित किया जा सकता है। भारतीय नैतिकता कार्यक्षेत्र में टीम वर्क, नेतृत्व क्षमता और अनुशासन को सशक्त करती है, जो किसी भी संस्थान की सफलता के लिए आवश्यक है।

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय दर्शन

भारतीय दर्शन अपनी व्यापकता, समग्रता और सार्वभौमिक दृष्टिकोण के कारण वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अहिंसा, शांति, समावेशिता और आध्यात्मिकता जैसे सिद्धांत न केवल भारत में बल्कि संपूर्ण विश्व में भी प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय में, जब विश्व विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, भारतीय दर्शन में निहित सार्वभौमिक मूल्यों ने एक मार्गदर्शक के रूप में अपनी पहचान बनाई है। योग, ध्यान और अहिंसा जैसे भारतीय विचारों ने वैश्विक परिदृश्य में गहरी छाप छोड़ी है। भारतीय दर्शन की अहिंसा और शांति की अवधारणा वैश्विक स्तर पर शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा का सिद्धांत केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह वैश्विक आंदोलनों का प्रेरणास्रोत बना। नागरिक अधिकार आंदोलनों से लेकर विश्व शांति मिशनों तक, भारतीय दर्शन ने संघर्ष समाधान और सामाजिक समरसता में योगदान दिया है। बौद्ध और जैन दर्शन में अहिंसा को जीवन का केंद्रीय सिद्धांत माना गया है, जिसका प्रभाव विश्व स्तर पर देखा जा सकता है। बौद्ध धर्म के माध्यम से अहिंसा और सहिष्णुता के सिद्धांत एशिया के विभिन्न देशों में गहरे तक स्थापित हुए। भारतीय दर्शन वैश्विक स्तर पर सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और शांति की भावना को बढ़ावा देने में सहायक रहा है, जो आज भी अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।¹¹

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) द्वारा अपनाए गए कई सिद्धांत भारतीय मूल्यों से प्रेरित हैं। सतत विकास लक्ष्यों में समावेशन, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और शांति को प्राथमिकता दी गई है, जो भारतीय दर्शन के मूल सिद्धांतों से मेल खाते हैं। 'वसुधैव कुटुंबकम्' अर्थात् 'संपूर्ण विश्व एक परिवार है' की अवधारणा संयुक्त राष्ट्र के समावेशी विकास मॉडल से गहराई से जुड़ी हुई है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद और अन्य भारतीय विचारकों के विचारों को वैश्विक मंचों पर सराहा गया है। योग दिवस को संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता देना भारतीय मूल्यों के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति का एक प्रमुख उदाहरण है। भारतीय परंपराओं में निहित शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सर्वधर्म समभाव की भावना, संयुक्त राष्ट्र के बहु-आयामी दृष्टिकोण को सशक्त करने में सहायक रही है।

योग भारतीय दर्शन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसने वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य, कल्याण और आंतरिक शांति की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता मिलने से भारतीय योग परंपरा को वैश्विक स्वीकृति मिली है। आधुनिक जीवनशैली से उत्पन्न मानसिक और शारीरिक समस्याओं के समाधान के रूप में योग को विश्वभर में अपनाया जा रहा है। पश्चिमी देशों में योग केवल शारीरिक व्यायाम तक सीमित न रहकर, मानसिक शांति और आत्म-साक्षात्कार का एक साधन बन गया है। महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों में वर्णित यम, नियम, ध्यान और समाधि के सिद्धांत आज भी व्यक्तिगत और सामाजिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। आयुर्वेद, जो योग का ही एक महत्वपूर्ण घटक है, भी वैश्विक स्वास्थ्य सेवाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। प्राकृतिक चिकित्सा, आहार नियंत्रण और आयुर्वेदिक औषधियों का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपयोग बढ़ रहा है, जिससे भारतीय जीवन दृष्टि को और अधिक मजबूती मिल रही है।¹²

भारतीय दर्शन सहिष्णुता और समावेशिता की भावना को बढ़ावा देता है, जिसके कारण विभिन्न सभ्यताओं के साथ भारत का सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्राचीन काल से होता आ रहा है। वैश्वीकरण के इस युग में भारतीय दर्शन की सार्वभौमिकता इसे अन्य संस्कृतियों के साथ समन्वय स्थापित करने में सहायता करती है। भारतीय धर्म, कला, संगीत, योग और साहित्य ने वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। स्वामी विवेकानंद ने अपने शिकागो भाषण में भारतीय दृष्टिकोण की जो व्याख्या की थी, वह आज भी पश्चिमी समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है। भारतीय दर्शन में निहित समन्वय और सहअस्तित्व के सिद्धांत अंतर-सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित करने में सहायक हैं। भारतीय दृष्टिकोण विभिन्न संस्कृतियों के साथ मिलकर एक समावेशी वैश्विक समाज के निर्माण में सहायक हो सकता है। यह विभिन्न संस्कृतियों के मध्य सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व, पारस्परिक सम्मान और सहयोग को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष

भारतीय दर्शन अपनी गहनता और व्यापकता के कारण सदियों से समाज को दिशा प्रदान करता रहा है। इसके सिद्धांत न केवल आत्मज्ञान और मोक्ष प्राप्ति तक सीमित हैं, बल्कि यह समाज, शिक्षा, प्रशासन, और नैतिकता के क्षेत्र में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। आधुनिक समाज में नैतिकता, सहिष्णुता, और आत्मनिर्भरता के संकटों के समाधान के रूप में भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण को अपनाना समय की आवश्यकता है। इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय दर्शन आज भी समाज के लिए उतना ही प्रासंगिक है जितना कि प्राचीन काल में था। वैश्वीकरण, भौतिकवाद और उपभोक्तावाद के बढ़ते प्रभाव के कारण आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। भारतीय दर्शन में निहित सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और संयम जैसे सिद्धांत आधुनिक जीवन की जटिलताओं को हल करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। भारतीय दर्शन को आधुनिक समाज में प्रभावी ढंग से पुनर्स्थापित करने के लिए शिक्षा, नीति, प्रशासन और सामाजिक जीवन में व्यापक सुधार की आवश्यकता है। युवाओं को भारतीय मूल्यों से जोड़ने और नीति-निर्माताओं को दिशा-निर्देशन प्रदान करने के लिए भारतीय दर्शन के सिद्धांतों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

Author's Declaration:

The views and contents expressed in this research article are solely those of the author(s). The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible for any errors, ethical misconduct, copyright infringement, defamation, or any legal consequences arising from the content. All legal and moral responsibilities lie solely with the author(s).

संदर्भ सूची

1. शर्मा, पी. (2021). भारतीय दर्शन और समाज— एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण. भारतीय ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 45।
2. वर्मा, ए. (2020). नीति शास्त्र और आधुनिक समाज में इसकी भूमिका. भारतीय दर्शन परिषद्, वाराणसी, पृष्ठ 56।
3. त्रिपाठी, एस. (2021). दर्शनशास्त्र का समाज पर प्रभाव. प्रगति पब्लिकेशन, लखनऊ, पृष्ठ 102।
4. वही, पृष्ठ 103।
5. तिवारी, के. (2017). भारतीय दर्शन के विविध आयाम. बोधि पब्लिशर्स, पटना, पृष्ठ 26।
6. शर्मा, ए. (2020). भारतीय शिक्षा में नैतिक मूल्यों का योगदान. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 15(2), 78–79।
7. सिंह, आर. (2021). धर्म और नैतिकता का प्रशासन में योगदान. राष्ट्रीय दर्शन परिषद् जर्नल, 3 (1), 120।
8. कुमार, आर. (2019). वैश्विक परिदृश्य में भारतीय चिंतन. न्यू एज पब्लिशर्स, दिल्ली, पृष्ठ 77।
9. वही, पृष्ठ 78।
10. यादव, एम. (2021). भारतीय समाज में नीति और प्रशासन. शिक्षा और संस्कृति जर्नल, 25(4), 64।
11. कुमार, आर. (2019). वैश्विक परिदृश्य में भारतीय चिंतन. न्यू एज पब्लिशर्स, दिल्ली, पृष्ठ 169।
12. सिंह, ए. (2021). भारतीय दर्शन और सतत विकास. ओमेगा पब्लिकेशन, अहमदाबाद, पृष्ठ 112।

Cite this Article-

'डॉ० ओम प्रकाश प्रभाकर' 'भारतीय दर्शन का आधुनिक समाज पर प्रभाव: एक नीति शास्त्रीय दृष्टिकोण', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:09, September 2025.

Journal URL- <https://www.researchvidyapith.com/>

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i90002

Published Date- 02 September 2025